IJAER/ November-December 2021 /Volume-10/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

समाज में मूल्य की अवधारणा पर आधारित शिक्षा का संक्षिप्त अध्ययन

Manjita Tyagi

RESEARCH SCHOLAR

COLLEGE OF EDUCATION, IIMT UNIVERSITY GANGANAGAR MEERUT

सार–

मूल्य की अवधारणा मनुष्य के प्रत्येक चुनाव, निश्चय, निर्णय तथा कार्य में विद्यमान है। जब हम दो वस्तुओं या दो मनोरथों में चुनाव करते हैं तो उस मनोरथ को प्राप्त करने का निश्चय करते हैं जो अधिक श्रेष्ठ है और इसी निर्णय के अनुसार जीवन में कार्य करते हैं। इस चुनाव, निर्णय तथा निश्चय में उन वस्तुओं या मनोरथों के मूल्य की अवधारण छिपी है। एक का मूल्य दूसरे से अधिक ठहराया गया है। यदि ऐसा मूल्यांकन न होता, तो निर्णय कभी नहीं हो सकता था। व्यक्ति एक वस्तु को पसन्द करता है, दूसरी को नापसन्द, एक व्यक्ति की प्रशंसा करता है, दूसरे की निन्दा करता है, एक कार्य को शुभ मानता है और दूसरे को अशुभ, ये सारे निर्णय मूल्य की अवधारणा पर आधारित है। मूल्य ही मनुष्य के लिए आदर्श, उद्देश्य, लक्ष्य, गन्तव्य, मनोरथ एवं साध्य बनते हैं और वह जीवन को इनकी प्राप्ति के लिए लगा देता है। मूल्य जीवन को सार्थक बनाते हैं। मूल्य ही मनुष्य के मन में विश्वास, श्रद्धा, प्रेरणा, वफादारी, जिम्मेदारी, कर्तव्य भावना आदि उत्पन्न करते हैं। मूल्य ही मनुष्य के जीवन को अर्थ, आकर्षण, उच्चता तथा श्रेष्ठता प्रदान करते हैं। आज निश्चित रूप से हमने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के रूप में उल्लेखनीय प्रगति की है। नवीन आविष्कारों एवं अनुसंधानों के कारण मानव जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आए हैं। भौतिक सुख–सुविधा व सम्पन्नता बढ़ी है। ज्ञान के क्षेत्र में नित–नई सूचनाएं हमारे मस्तिष्क को उद्वेलित कर रही हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि क्या ज्ञान प्राप्त करें ? क्या छोड़ें ? हम थोड़े ही समय व श्रम से सब कुछ प्राप्त करने की लालसा करते हैं। जब सब प्राप्त नहीं कर पाते तो भ्रमित हो जाते हैं तथा उचित–अनुचित में भेद किये बिना ही, स्वयं को ही सही मानते हुए कार्य करते–रहते हैं। यह भी नहीं विचार करते कि इससे हमारे समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? समाज के प्रति भी हमारे क्या उत्तरदायित्व हैं ? आज आधुनिकता की दौड़ में हम वो सब कुछ किए जा रहे हैं जो कि हमारे अस्तित्व के लिए ही घातक हैं। आज हिंसा, धार्मिक कट्टरवाद, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, जातिवाद, भ्रष्टाचार, अनुशासनहीनता, स्वार्थ इस तरह से बढ़ गए हैं कि इसने हमारे सामाजिक ताने–बाने, सौहार्द, सहनशीलता, भाईचारा, सहिष्णुता, नैतिकता परोपकारिता जैसे मूल्यों को तहस–नहस कर दिया है। न केवल हमारे देश वरन् सभी देशों में यह मूल्य पतन दृष्टिगोचर होता है। यह बहुत ही चिंताजनक पहलू है कि जीवन में सामाजिक व राष्ट्रहित की अपेक्षा व्यक्तिगत स्वार्थ व हित बढ़ा है। आज हमें वर्तमान एवं भविष्य की पीढ़ी के अस्तित्व को ध्यान में रखते हुए मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता है। आज न केवल विद्यालय, परिवार, समुदाय वरन सम्पूर्ण सामाजिक ईकाईयों को एकजुट होकर मूल्यों के विकास व दैनिक जीवन में उन्हें अनुप्रयोग करने के समन्वित प्रयास करने की आवश्यकता है।

प्रस्तावना–

मूल्य युग परिवर्तन के साथ–साथ बदलते रहते हैं। वर्तमान वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी प्रधान युग में शिक्षा के प्रसार के बावजूद जीवन मूल्यों में ह्रास दिखाई दे रहा है। मूल्य आधारित जीवन शैली को ध्यान में रखते हुए यह जरूरी है कि प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा एवं अन्य समस्त प्रकार की शिक्षा में मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु

विशिष्ट व संगठित प्रयत्न किये जायें। आज निश्चित रूप से हमने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के रूप में उल्लेखनीय प्रगति की है। नवीन आविष्कारों एवं अनुसंधानों के कारण मानव जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आए हैं। भौतिक सुख–सुविधा व सम्पन्नता बढ़ी है। ज्ञान के क्षेत्र में नित–नई सूचनाएं हमारे मस्तिष्क को उद्वेलित कर रही हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि क्या ज्ञान प्राप्त करें ? क्या छोड़ें ? हम थोड़े ही समय व श्रम से सब कुछ प्राप्त करने की लालसा करते हैं। जब सब प्राप्त नहीं कर पाते तो भ्रमित हो जाते हैं तथा उचित–अनुचित में भेद किये बिना ही, स्वयं को ही सही मानते हुए कार्य करते–रहते हैं। यह भी नहीं विचार करते कि इससे हमारे समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? समाज के प्रति भी हमारे क्या उत्तरदायित्व हैं ? आज आधुनिकता की दौड़ में हम वो सब कुछ किए जा रहे हैं जो कि हमारे अस्तित्व के लिए ही घातक हैं। आज हिंसा, धार्मिक कट्टरवाद, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, जातिवाद, भ्रष्टाचार, अनुशासनहीनता, स्वार्थ इस तरह से बढ़ गए हैं कि इसने हमारे सामाजिक ताने–बाने, सौहार्द, सहनशीलता, भाईचारा, सहिष्णुता, नैतिकता परोपकारिता जैसे मूल्यों को तहस–नहस कर दिया है। न केवल हमारे देश वरन् सभी देशों में यह मूल्य पतन दृष्टिगोचर होता है। यह बहुत ही चिंताजनक पहलू है कि जीवन में सामाजिक व राष्ट्रहित की अपेक्षा व्यक्तिगत स्वार्थ व हित बढ़ा है। आज हमें वर्तमान एवं भविष्य की पीढ़ी के अस्तित्व को ध्यान में रखते हुए मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता है। मूल्य आधारित शिक्षा की व्यवस्था करने से पूर्व यह भी जानना आवश्यक है कि मूल्य क्या है? मूल्यों के विषय में विभिन्न विचारकों, दार्शनिकों, शिक्षाशास्त्रियों आदि के विचार भिन्न–भिन्न हैं। मूल्य हमारे व्यवहार को प्रभावित करते हैं और स्वयं व्यवहार द्वारा प्रभावित भी होते हैं। मूल्य शब्द का प्रयोग व्यक्ति की पसंद– नापसंद अथवा प्राथमिकताओं के निर्धारण के लिए किया जाता है। गार्डन आलपोर्ट के अनुसार, ''मूल्य वे विश्वास हैं जिन पर व्यक्ति प्राथमिकता से कार्य करता है।'' ननली के विचार में, ''मूल्य जीवन के लक्ष्यों तथा जीवन शैली से संबंधित होते हैं।'' फ्लिंक ने मूल्यों की अनेक परिभाषाओं का अध्ययन करने के बाद कहा कि ''मूल्य वे मानक हैं जो कार्य करने के विभिन्न विकल्पों में व्यक्ति के चयन को प्रभावित करते हैं।'' मूल्य वे निर्देश, आदर्श, मानक, मानदंड और सिद्धांत हैं जो मनुष्य को किसी महत्तर उद्देश्य या लक्ष्य के प्रति उन्मुख होने के लिए प्रेरित एवं दिशा–निर्देशित करते हैं। जब कोई कार्य इसलिए किया जाता है क्योंकि वह किया जाना चाहिए और उस कार्य के प्रतिफल के रूप में कोई व्यक्तिगत स्वार्थ या लाभ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निहित नहीं रहता, तब उस कार्य को नैतिक कार्य की श्रेणी में रख सकते हैं क्योंकि तब इस कार्य में नैतिक मूल्य निहित होता है।

'मूल्य' उन सभी तत्वों को अपने में समाहित किए हुए हैं जो व्यक्ति विशेष के शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक सवंर्धन के लिए महत्वपूर्ण होते हैं तथा ये तत्व अपने मूल रूप में ही इच्छित तथा उपादेय समझते जाते हैं। आज समाज में हमें मूल्यों की गिरावट दिखाई पड़ती है, समाज में घटने वाली सभी घटनाओं का सरोकार किसी न किसी हद तक मूल्यों से रहता है। ये घटनाएं या तो मूल्योन्मुखी होती हैं या मूल्यों से परे या कहीं इनके बीच में। यदि घटनाएं अच्छी हों तथा व्यक्ति विशेष व समाज की इच्छाओं के अनुरूप हों तो उन्हें सापेक्षतया मूल्यपरक कहा जाता है। खेद का विषय है कि हमारे शैक्षिक संस्थान कुशल व्यक्तियों का निर्माण तो कर रहे हैं, परन्तु अच्छे नागरिकों या मानवों का निर्माण नहीं। वर्तमान शैक्षिक संस्थानों को मानव जीवन में मूल्यों को विकसित करने वाला होना चाहिये। मानवीय मूल्यों में ह्रास के कारण आज हम विभिन्न प्रकार के कष्ठों और दुःखों का सामना कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा अपने उद्देश्यों को पूरा करने में असमर्थ हो गयी है। वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के अस्तित्व के लिए एवं उनके कल्याण के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम शिक्षा के द्वारा भावी नागरिकों में मूल्यों का विकास करें। मूल्यों में यह कभी आधुनिकता की अन्धी दौड़, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, सिनेमा, भारतीय संस्कृति से दूर जाने आदि के कारण प्रतीत होती है। मूल्यों के विकास में परिवार, विद्यालय, समुदाय आदि सभी को समन्वित प्रयास करने की आवश्यकता है।

परिवार एक सामाजिक संस्था है जिसकी अपनी संस्कृति, परम्पराएँ और रीति–रिवाज होते हैं। परिवार को बालक की प्रथम पाठशाला माना जाता है। जन्म के बाद बालक का पहला सम्पर्क पारिवारिक सदस्यों से होता है। बालक के

व्यक्तित्व के विकास पर परिवार का प्रभाव अवश्य पड़ता है। बाल्यकाल की शिक्षा व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। बाल्यकाल की शिक्षा परिवार में ही बालक के रहन–सहन, बोलचाल, खेल, शारीरिक स्वच्छता आदि से संबंधित होती है। परिवार के अन्य सदस्यों की तुलना में बालक पर उसके माता–पिता का गहरा प्रभाव पड़ता है और माता–पिता में भी माता का बालक के चरित्र, उसकी आदतों व व्यवहार पर अधिक प्रभाव पड़ता है। बालक के ऊपर विभिन्न प्रकार के पारिवारिक मूल्यों का गहरा प्रभाव पड़ता है। अगर पारिवारिक मूल्य अच्छे हैं तो मूल्यों का बालक में नैतिक, चारित्रिक व सामाजिक मूल्यों के विकास के लिए जरूरी है कि परिवार का वातावरण स्वस्थ, शांतिपूर्ण व सुखद हो। परिवार के सदस्यों के बीच आपसी संबंध प्रेम, सहयोग, सहानुभूति, सच्चाई, ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता आदि मूल्यों पर आधारित हों। परिवार में रहकर ही बालक अपने अंदर विभिन्न प्रकार के मूल्यों का विकास करता है, दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि बालक के अंदर मूल्यों के विकास में परिवार प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। प्रेम, बड़ों के प्रति सम्मान, अनुशासन, दया, मेल–जोल से रहना, सहनशीलता, धैर्य, ईमानदारी, परंपराओं व रीति–रिवाजों के प्रति सम्मान, आज्ञापालन, त्याग, सत्य, सेवाभाव, सहायता और ईश्वर के प्रति आस्था जैसे महत्वपूर्ण मूल्यों का विकास परिवार में रहकर ही होता है। समाज परिवार से यह आशा करता है कि वह अच्छे, जनतांत्रिक, नैतिक व चरित्रवान नागरिक उत्पन्न करे, जो समाज की प्रगति व कल्याण में अपना योगदान दे सकें। बालक अनुकरण से सीखता है इसलिए परिवार के सदस्यों को स्वयं भी बालकों के समक्ष अच्छे उदाहरण प्रस्तुत करने चाहिए। परिवार के सदस्यों को आपस में व विशेषकर बालक के साथ प्रेम, सहानुभूतिपूर्ण और संयमपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। बालक के नैतिक व चारित्रिक विकास में परिवार का अटूट महत्तव है। परिवार के सदस्यों का आचरण व चरित्र ऐसा हो कि बालक उसके प्रभावित होकर एक उत्तम चरित्र का विकास कर सके। बालकों में सौंदर्यात्मक मूल्यों का विकास उनके द्वारा अपना कमरा साफ–सुथरा रखने, स्वच्छ वस्त्र पहनने, अच्छी कविता, कहानी व लेख पढ़ने व लिखने, बागवानी, सुंदर पेंटिंग बनाने इत्यादि से किया जा सकता है। स्वास्थ्य संबंधी मूल्यों का विकास बालकों को पौष्टिक व संतुलित भोजन, व्यायाम, स्वच्छता व स्वास्थ्य रक्षा संबंधी नियमों की जानकारी देकर किया जा सकता है। उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है कि परिवार जो कि शिक्षा का अनौपचारिक साधन है बालकों में मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता हैं।

बालकों में विभिन्न मूल्यों के विकास में विद्यालय की भूमिका बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण है। विद्यालय समाज का लघु रूप होता है और समाज का अभिन्न अंग माना जाता है। विद्यालयों की स्थापना के पीछे मूल भावना यही है कि विद्यालय बालकों का सर्वांगीण व समुचित विकास समाज व देश की आवश्यकताओं के अनुसार करके इस योग्य बनाए कि वे कुशल व उपयोगी नागरिक बनकर समाज व देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकें। विद्यालय के द्वारा बालकों को अपनी सांस्कृतिक विरासत से परिचित रहना चाहिए ताकि बालक अपनी महान सांस्कृतिक विरासत को समझ सकें एवं उसकी रक्षा और विकास में अपना योगदान दे सकें।

विद्यालय का उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है और इसके लिए बालक को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक, संवेगात्मक, राजनैतिक, धार्मिक और आर्थिक आदि मूल्यों से परिचित करना व इन महत्वपूर्ण मूल्यों से परिचित करना व इन महत्वपूर्ण मूल्यों का बालक में विकास करना अति आवश्यक है। विद्यालय के व्यवस्थापक, प्रधानाचार्य, अध्यापक व अन्य कर्मचारियों का यह पुनीत कर्तव्य है कि वे सभी अपने समन्वित प्रयासों द्वारा बालकों में इन उपयोगी मूल्यों के विकास में अपना अमूल्य योगदान दें।

विद्यालयों में राष्ट्रीय उत्सव, जैसे स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, गाँधी जयंती मानने चाहिए व विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन इस प्रकार से करना चाहिए कि बालकों में राष्ट्रीय एकता व देशभक्ति जैसे मूल्यों का विकास कर सकें। बालकों में नैतिक व चारित्रिक मूल्यों के विकास के लिए आवश्यक है कि उन्हें महापुरूषों की जीवनियाँ पढ़ाई जायें व इन पर आधारित विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये। विद्यालय का प्रारम्भ सर्व धर्म प्रार्थना से किया जाये। प्रार्थना सभा

में सभी धर्मों के पवित्र अंशों को सुनाया जाये। विद्यार्थियों को रोज एक अच्छा कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाये व उस किये गये कार्य को अन्य विद्यार्थियों के सम्मुख रखा जाये ताकि वे भी अच्छे कार्यों को करने के लिए प्रेरित हो सकें। विद्यालयों द्वारा दूसरे देशों की संस्कृति, धर्मों, विशेषताओं आदि की जानकारी भी बालकों को देनी चाहिए जिससे कि अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना व विश्व–बंधुत्व की भावना विकसित हो सके। विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास के लिए दूसरे व्यक्तियों का आदर, एक दूसरे के साथ प्रेम व सहयोगी व्यवहार, त्याग व सेवा, अपनी वस्तुओं को आदान–प्रदान, अपने अधिकारों के साथ–साथ कर्तव्यों का निर्वहन, दूसरों के साथ समानता का व्यवहार आदि का विकास किया जाना चाहिए।

बालकों के अंदर मूल्यों के विकास के संदर्भ में अध्यापक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। अध्यापक को स्वयं को विभिन्न मूल्यों का समझ होनी चाहिए, साथ–ही–साथ अध्यापक के व्यवहार व कार्यों में तथा विद्यार्थियों व अन्य व्यक्तियों के साथ अंतर्क्रिया में ये मूल्य दिखाई पड़ने चाहिए। अध्यापक को समय पर विद्यालय आना चाहिए, समय पर अपनी कक्षा लेनी चाहिए ताकि बालकों में समय की पाबंदी व अनुशासन जैसे मूल्यों का विकास हो सके। शिक्षकों को शिक्षण करते समय दृश्य–श्रव्य सामग्री, ओवर हैड प्रोजेक्टर आदि का समुचित प्रयोग करना चाहिए, इससे विद्यार्थी पढ़ने में अधिक रूचि लेंगे। समय–समय पर सेमिनार, वाद–विवाद प्रतियोगिता, निबंध लेखन प्रतियोगिता, रँगोली प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता और विभिन्न प्रकार के खेल–कूद आदि का आयोजन भी किया जाना चाहिए। देश के प्रति सेवा–भाव व समर्पण जैसे मूल्यों के विकास में एन0एस0एस0, एन0सी0सी0, स्काउट एवं गाइड का विशेष योगदान है। बालकों को इनमें भाग लेने के लिए शिक्षकों द्वारा प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। शिक्षकों का आदर्श व्यक्तित्व होना चाहिए जिससे विद्यार्थी उससे प्रेरित हो सकें। दुःख का विषय है कि आज अध्यापकों में अपने उत्तरदायित्वों के निर्वाहन में उदासीनता दिखाई पड़ती है। इस उदासीनता के कई कारण हैं, जैसे–शिक्षण योग्य व्यक्तियों का अध्यापन व्यवसाय में प्रवेश न करना या दूसरे अपनी पसंद की कोई नौकरी या व्यवस्था न मिलने पर इस व्यवसाय में प्रवेश करना, अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में गुणवत्ता की कमी आदि। आज इस बात की जरूरत है कि अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रमों में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से मूल्यपरक शिक्षा का समावेश किया जाये। परिचर्या, भाषण, वाद–विवाद, प्रार्थना, कार्यशाला, सेमिनार, मूल्यपरक चिंतन व लेखन आदि के द्वारा भावी अध्यापकों में विभिन्न मूल्यों का विकास किया जाना चाहिए। सेवाकालीन शिक्षकों को समय–समय पर विभिन्न प्रकार के सेमिनार, कार्यशाला, शिविर आदि के आयोजनों द्वारा नवीन मूल्यों की जानकारी, मूल्यपरक शिक्षा की विधियों की जानकारी, मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करने के व्यावहारिक सूत्रों की जानकारी और मूल्यपरक शिक्षा से जुड़ी पाठ्य–सहगामी क्रियाओं आदि की जानकारी प्रदान की जानी चाहिए।

निष्कर्ष–

वर्तमान में मनुष्य अत्यधिक स्वार्थी हो गया है। इसी कारण मूल्यों का ह्रास हो रहा है। मूल्यों के ह्रास के लिए काफी हद तक जिम्मेदार है हमारा समाज, एवं हमारी शिक्षा है, क्योंकि कोई भी मनुष्य जन्मजात खराब नहीं होता है, उसे वातावरण खराब बनाता है। जब बालक पैदा होता है तो वह सबसे प्रेम करता है। उसका हृदय पवित्र होता है। उसमें जाति–पाति का भेदभाव नहीं होता है। उसमें मानवीय मूल्य होते हैं। धीरे–धीरे जब वह बड़ा होता जाता है तो झूठ, स्वार्थ, लोभ, हिंसा, घृणा, उसमें पनपने लगते हैं, वह इसके वशीभूत हो जाता है। कल तक हम जिन मूल्यों को गिरा हुआ समझते थे, आज उन्हीं के पीछे भाग रहे हैं। कई असामाजिक तत्व हैं जो हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाते हैं, इसे नष्ट करते हैं। उपर्युक्त सभी मूल्य ऐसे हैं जो आधुनिक समाज में गिरते जा रहे हैं। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आज हमारा समाज मूल्य–संकट के दौर से गुजर रहा है। इस संकट को दूर करने के लिए मूल्यपरक शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता है। बालकों में मूल्यों का विकास आज समय की सबसे बड़ी चुनौती व आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूची

- आर० ए० शर्मा (2011) शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार। मेरठः आर० लाल बुक डिपो।
- कौल, लोकेश (2012) शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली। नोएडाः विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।
- गेरैट, एच०ई० (2000) शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग। लुधियानाः कल्याणी पब्लिशर्स।
- चतुर्वेदी, स्नेहलता (2016) पाठयक्रम में भाषा। आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
- पलोड़, सुनिता – लाल, आर०बी० (2008) शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग। मेरठः आर०लाल बुक डिपो।
- पचौरी, जी0 (2009) शिक्षा के सामाजिक आधार। मेरठः आर0 लाल बुक डिपो।
- पाण्डेय, आर0 (2001) शैक्षिक निबन्ध। आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- बैस्ट, जे० डब्ल्यू० (2011) रिसर्च इन एजुकेशन। नई दिल्लीः पी०एच०आई० लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।
- राय, पी० – राय, सी० पी० (2012) अनुसंधान परिचय । आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
- सिंह, आर0 (1976) संस्कृत भाषा विज्ञान। आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- जे0लोढा (2004) ''अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम में मूल्यपरक शिक्षा का प्रारूप'', भारतीय आधुनिक शिक्षा।